

## विषय — मन

स्वर्ण पाठः अय्यूब 28 : 12, 28

---

"बुद्धि कहां मिल सकती है? और समझ का स्थान कहां है? तब उस न मनुष्य से कहा, देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है: और बुराई से दूर रहना यही समझ है।"

---

उत्तरदायी अध्ययन: नीतिवचन 3 : 5-8, 11, 12

- <sup>5</sup> तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
- <sup>6</sup> उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।
- <sup>7</sup> अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।
- <sup>8</sup> ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी।
- <sup>11</sup> हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुंह न मोड़ना, और जब वह तुझे डांटे, तब तू बुरा न मानना,
- <sup>12</sup> क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है उस को डांटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है॥

### पाठ उपदेश

#### बाइबल

#### 1. व्यवस्थाविवरण 6 : 4, 5

- <sup>4</sup> हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;
- <sup>5</sup> तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।

#### 2. याकूब 4 : 6 (परमेश्वर)-8, 10

- <sup>6</sup> परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।
- <sup>7</sup> इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।
- <sup>8</sup> परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो।
- <sup>10</sup> प्रभु के साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।

3. दानियेल 4 : 4, 5 (से 1st ), 7, 8 (से 1st ), 8 (और पहले) (से 1st ), 19 (से 1st ), 19 (उसने उत्तर दिया) (से 1st ), 20 (से 1st ), 22, 23 (से 1st ;), 24-27, 29-31, 33 (से 3rd ), 34-36 (से 1st ;), 36 (और मैं), 37
- 4 मैं नबूकदनेस्सर अपने भवन में चैन से और प्रफुल्लित रहता था।
- 5 मैं ने ऐसा स्वप्न देखा जिसके कारण मैं डर गया।
- 7 तब ज्योतिषी, तन्त्री, कसदी और होनहार बताने वाले भीतर आए, और मैं ने उन को अपना स्वप्न बताया, परन्तु वे उसका फल न बता सके।
- 8 निदान दानियेल मेरे सम्मुख आया, ... और मैं ने उसको अपना स्वप्न यह कह कर बता दिया,
- 19 तब दानियेल। ... उत्तर दिया और कहा!
- 20 जिस वृक्ष हो तू ने देखा।
- 22 हे राजा, वह तू ही है। तू महान और सामर्थी हो गया, तेरी महिमा बढ़ी और स्वर्ग तक पहुंच गई, और तेरी प्रभुता पृथ्वी की छोर तक फैली है।
- 23 और हे राजा, तू ने जो एक पवित्र पहलू को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उसका नाश करो।
- 24 हे राजा, इसका फल जो परमप्रधान ने ठाना है कि राजा पर घटे, वह यह है,
- 25 कि तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; तू बैलों की नाई घास चरेगा और आकाश की ओस से भीगा करेगा; और सात युग तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है।
- 26 और उस वृक्ष के टूठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना रहेगा; और जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है, तब तू फिर से राज्य करने पाएगा।
- 27 इस कारण, हे राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़ कर धर्म करने लगे, और अधर्म छोड़ कर दीन-हीनों पर दया करने लगे, तो सम्भव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे॥
- 29 बारह महीने बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा,
- 30 क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?
- 31 यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया,
- 33 उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों की नाई घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस से भीगती थी, यहां तक कि उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिड़ियों के चंगुलों के समान बढ़ गए॥
- 34 उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाई, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कह कर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहने वाला है।

- <sup>35</sup> पृथ्वी के सब रहने वाले उसके साम्हने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोक कर उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है?
- <sup>36</sup> उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर फिर आ गया। और मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिये आने लगे, और मैं राज्य में स्थिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी।
- <sup>37</sup> अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे॥

#### 4. 1 यूहन्ना 2 : 16, 17

- <sup>16</sup> क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।
- <sup>17</sup> और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा॥

#### 5. इफिसियों 4 : 17, 18, 22, 23

- <sup>17</sup> इसलिये मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।
- <sup>18</sup> क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं।
- <sup>22</sup> कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।
- <sup>23</sup> और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।

#### 6. 2 तीमुथियुस 1 : 7

- <sup>7</sup> क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

#### 7. रोमियो 12 : 2

- <sup>2</sup> और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

### विज्ञान और स्वास्थ्य

## 1. 468 : 10-11

सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है।

## 2. 496 : 6 (में)-8

... क्रिश्चियन साइंस में पहला कर्तव्य ईश्वर का पालन करना, एक मन रखना और दूसरे को अपने जैसा प्यार करना है।

## 3. 256 : 19 (कौन)-23

वह कौन है जो हमारी आज्ञाकारिता की मांग करता है? वह जो, धर्मग्रंथ की भाषा में, "स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोक कर उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है?"

## 4. 183 : 21-25

डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

## 5. 372 : 25-32

"जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूंगा।" क्राइस्टियन साइंस में, सत्य का एक खंडन घातक है, जबकि सत्य का एक औचित्य है और उसने हमारे लिए जो किया है वह एक प्रभावशाली मदद है। यदि गर्व, अंधविश्वास या कोई त्रुटि प्राप्त लाभों की ईमानदार मान्यता को रोकती है, तो यह बीमार लोगों की वसूली और छात्र की सफलता में बाधा होगी।

## 6. 239 : 23-32

नश्वर मन मानव उद्देश्यों की स्वीकृत सीट है। यह भौतिक अवधारणाओं का निर्माण करता है और शरीर की हर अप्रिय क्रिया को उत्पन्न करता है। यदि क्रिया दिव्य मन से निकलती है, तो क्रिया सामंजस्यपूर्ण होती है। यदि यह गलत नश्वर मन से आता है, तो यह कलहपूर्ण है और पाप, बीमारी, मृत्यु में समाप्त होता है। वे दो विपरीत स्रोत कभी भी फव्वारा या धारा में नहीं मिलते हैं। परफेक्ट माइंड आगे की पूर्णता भेजता है, क्योंकि गॉड इज माइंड। नश्वर मन अपने स्वयं के सदृशों को भेजता है, जिनमें से बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "सभी गुमान है।"

## 7. 414 : 4-14

पागलपन का उपचार विशेष रूप से दिलचस्प है। हालांकि मामले में बाधा है, यह सच्चाई की सलामी कार्रवाई के लिए अधिकांश रोगों की तुलना में अधिक आसानी से उपज देता है, जो त्रुटि का प्रतिकार करता है। पागलपन का इलाज करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दलीलें अन्य बीमारियों की तरह ही हैं: अर्थात्, वह असंभावना, जो मस्तिष्क, मस्तिष्क को नियंत्रित या विचलित कर सकती है, पीड़ित या पीड़ित कर सकती है; यह भी तथ्य कि सत्य और प्रेम स्वस्थ राज्य, मार्गदर्शक और शासित नश्वर मन या रोगी के विचार को स्थापित करेंगे, और सभी त्रुटि को नष्ट कर देंगे, चाहे इसे मनोभ्रंश, घृणा, या कोई अन्य कलह कहा जाए।

### 8. 6 : 3 (ईश्वरीय)-16

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है। परमेश्वर उस बुद्धि से अलग नहीं है जिसे वह श्रेष्ठ मानता है। वह जो प्रतिभा देता है, हमें उसे सुधारना चाहिए। अपने काम के लिए उससे माफी मांगना जो बुरी तरह से किया गया है या पूर्ववत् छोड़ दिया गया है, इस बेकार दलील को इंगित करता है कि क्षमा मांगने के अलावा हमारे पास कुछ भी नहीं है, और इसके बाद हम अपराध को दोहराने के लिए स्वतंत्र होंगे।

पाप के परिणाम के रूप में पीड़ित होने के लिए, पाप को नष्ट करने का साधन है। जब तक भौतिक जीवन में पाप और पाप नष्ट नहीं हो जाते, तब तक पाप का हर आनंद उसके दर्द के बराबर होगा। स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, हम होने के दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए।

### 9. 22 : 20-22

प्रेम हमें प्रलोभन देने के लिए जल्दी में नहीं है, क्योंकि प्रेम का अर्थ है कि हमें कोशिश और शुद्ध करना होगा।

### 10. 240 : 24-32

याद रखें कि मानव जाति को देर-सबेर, या तो कष्ट सहकर या विज्ञान द्वारा, उस त्रुटि के प्रति आश्वस्त होना होगा जिसे दूर करना है।

इन्द्रिय भ्रान्तियों को दूर करने के प्रयास में व्यक्ति को पूर्णतया और निष्पक्ष रूप से सबसे अधिक कीमत चुकानी पड़ती है, जब तक कि सभी त्रुटियाँ अंततः सत्य के अधीन न आ जाएँ। पाप की मजदूरी का भुगतान करने की दैवीय पद्धति में किसी के झंझटों को खोलना, और अनुभव से सीखना शामिल है कि कैसे इंद्रिय और आत्मा के बीच विभाजन करना है।

### 11. 239 : 11-22

दुष्ट व्यक्ति अपने ईमानदार पड़ोसी का शासक नहीं होता। यह समझ लिया जाए कि गलती में सफलता सत्य में हार है। ईसाई विज्ञान का प्रहरी है पवित्रशास्त्र: "दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर।"

अपनी प्रगति का पता लगाने के लिए, हमें सीखना चाहिए कि हमारे संबंध कहां रखे गए हैं और जिन्हें हम स्वीकार करते हैं और भगवान के रूप में मानते हैं। यदि ईश्वरीय प्रेम हमारे निकट, प्रिय, और अधिक वास्तविक होता जा रहा है, तो यह बात आत्मा को सौंप रही है। जिन वस्तुओं का हम पीछा करते हैं और जो आत्मा हम प्रकट करते हैं वह हमारे दृष्टिकोण को प्रकट करती है, और दिखाती है कि हम क्या जीत रहे हैं।

## 12. 505 : 20-28

आध्यात्मिक समझ मन, जीवन, सत्य और प्रेम को प्रकट करती है, — और क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक प्रमाण देते हुए, दिव्य भावना को प्रदर्शित करता है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, विद्वानों की प्राप्ति का परिणाम नहीं है; यह प्रकाश में लाई गई सभी चीजों की वास्तविकता है।

## 13. 506 : 5-7

समझ ईश्वर का एक गुण है, एक ऐसा गुण जो क्रिश्चियन साइंस को अनुमान से अलग करता है और सत्य को अंतिम बनाता है।

## 14. 470 : 11-16 (से 2nd .)

ईश्वरीय विज्ञान अमूर्त कथन की व्याख्या करता है कि निम्नलिखित स्व-स्पष्ट प्रस्ताव द्वारा एक मन है: यदि ईश्वर, या अच्छा, वास्तविक है, तो बुराई, ईश्वर की अवांछितता, असत्य है। और बुराई केवल असत्य को वास्तविकता देकर वास्तविक प्रतीत हो सकती है। भगवान के बच्चों के पास एक मन है।

## 15. 469 : 30-5

एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है।

## 16. 470 : 32-5

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6